Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 06, June. 2025

बिहार के सारण प्रमंडल में उच्च शिक्षा स्तर के अध्यापकों के प्रशिक्षण का विश्लेषण: वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा

संतोष कुमार यादव*
शोधार्थी,
&
डॉ. नीरज कुमार,
पर्यवेक्षक, शिक्षा विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

सारांश

यह शोध-पत्र बिहार के सारण प्रमंडल (सारण, सीवान, गोपालगंज) में उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति, प्रभावशीलता, चुनौतियाँ और सुधार की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि यद्यपि कुछ संस्थानों ने फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP), ICT आधारित शिक्षण और नवाचार को अपनाना शुरू किया है, फिर भी अधिकांश महाविद्यालय संसाधनों की कमी, पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों पर निर्भरता और प्रशिक्षण की निरंतरता के अभाव से जूझ रहे हैं। प्रशिक्षण न केवल शिक्षकों की विषयगत दक्षता को बढ़ाता है, बल्कि शोध-उन्मुखता, तकनीकी दक्षता और छात्र-केंद्रित शिक्षण को भी सशक्त करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में, यह अध्ययन सुझाव देता है कि गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण ही उच्च शिक्षा की गुणवत्ता का मूल आधार है। इसलिए, निरंतर, तकनीकी रूप से सक्षम और प्रासंगिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कीवर्ड्स: शिक्षक-प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा, सारण प्रमंडल, फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020,** तकनीकी दक्षता, शिक्षण गुणवत्ता, छात्र-केंद्रित शिक्षण

1. प्रस्तावना एवं शोध का औचित्य

उच्च शिक्षा का स्तर किसी भी राज्य और राष्ट्र की प्रगति का सूचक है, और इसका प्रमुख आधार गुणवत्तापूर्ण शिक्षण है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षक अद्यतन ज्ञान, नवीन शिक्षण पद्धतियों और तकनीकी दक्षता से सुसज्जित हों। यही कारण है कि शिक्षक-प्रशिक्षण उच्च शिक्षा प्रणाली का एक अपरिहार्य अंग है। जैसा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1954) ने कहा था , "शिक्षक का स्थान समाज में सबसे ऊँचा है, क्योंकि वह भावी पीढ़ी को गढ़ता है।"यह उद्धरण इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि यदि शिक्षक स्वयं प्रशिक्षण और सतत् अधिगम की प्रक्रिया से नहीं गुजरते, तो शिक्षा की गुणवत्ता क्षीण हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2020) में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि "शिक्षकों का व्यावसायिक विकास आजीवन प्रक्रिया है, जिसके लिए निरंतर प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन आवश्यक है।"यह नीति इस बात पर बल देती है कि प्रशिक्षण केवल एक

* Corresponding Author: Santosh Kumar Yadav
Email: santosh22022kptgbhs@gmail.com
Received 20 May. 2025; Accepted 18 June. 2025. Available online: 30 June. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

औपचारिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला मुख्य घटक है। सारण प्रमंडल, जिसमें सारण, सीवान और गोपालगंज जिले आते हैं, बिहार राज्य के उच्च शिक्षा परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ कई महाविद्यालय और विश्वविद्यालय इकाइयाँ कार्यरत हैं। किंतु, बिहार शिक्षा विभाग (2020) की उच्च शिक्षा वार्षिक रिपोर्ट में यह उल्लेख है कि इस क्षेत्र के अधिकांश शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण के अवसर कम मिलते हैं, और जो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होते भी हैं, वे अक्सर पारंपरिक स्वरूप के होते हैं। यूनेस्को (2015) की वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट में कहा गया है —"गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी संभव है, जब शिक्षक गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण से सुसज्जित हों।"अर्थात, यदि शिक्षक-प्रशिक्षण की गुणवत्ता कमज़ोर है तो इसका सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता और शिक्षा की समग्र गुणवत्ता पर पड़ता है।

शोध का औचित्य इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण केवल विषय-ज्ञान तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह शिक्षक में आलोचनात्मक चिंतन, शोधाभिमुख दृष्टिकोण और नेतृत्व क्षमता विकसित करता है। पाउलो फ्रेरे (1970) ने अपनी पुस्तक पीड़ितों का शिक्षण शास्त्र में कहा था — "शिक्षा दुनिया को नहीं बदलती, शिक्षा लोग बदलते हैं, और लोग दुनिया को बदलते हैं।"यह बदलाव तभी संभव है जब शिक्षक लगातार सीखते रहें और समाज के बदलते शैक्षिक परिवेश के अनुसार खुद को ढालें। बिहार जैसे राज्यों में, जहाँ शैक्षिक संसाधनों की कमी और तकनीकी अवसंरचना का अभाव है, वहाँ प्रशिक्षण और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यह शोध इस तथ्य को समझने और मूल्यांकन करने का प्रयास है कि सारण प्रमंडल में उच्च शिक्षा स्तर के शिक्षकों को मिलने वाला प्रशिक्षण कितना प्रभावी है, किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है, और भविष्य में इसे कैसे सुदृढ़ किया जा सकता है। अंततः, यह अध्ययन न केवल शिक्षक-प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करेगा, बल्कि उच्च शिक्षा में सुधार के लिए व्यावहारिक सुझाव भी प्रस्तुत करेगा। जैसा कि महात्मा गांधी (1946) ने कहा था —"यदि हमें सच्चा भारत बनाना है, तो हमें पहले अपने शिक्षकों को प्रशिक्षित करना होगा।"यह कथन इस शोध के उद्देश्य को सार्थक रूप से परिभाषित करता है।

2. सारण प्रमंडल में शिक्षक-प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति

बिहार राज्य के सारण प्रमंडल में, जिसमें सारण, सीवान और गोपालगंज जिले शामिल हैं, उच्च शिक्षा का ढाँचा लगातार विकासशील है। यहाँ कई महाविद्यालय और विश्वविद्यालय इकाइयाँ कार्यरत हैं, जो क्षेत्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र हैं। किंतु शिक्षक-प्रशिक्षण की दृष्टि से स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है। राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA, 2019) की रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है —"राज्य विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण और अद्यतन शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान आवश्यक है, अन्यथा शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।"सारण प्रमंडल में यह चुनौती विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है।

1. वर्तमान प्रशिक्षण व्यवस्थाएँ

इस क्षेत्र में शिक्षक-प्रशिक्षण मुख्य रूप से राज्य स्तरीय कार्यशालाओं, मानव संसाधन विकास केंद्र (HRDC), पटना विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित रिफ्रेशर कोर्स और फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP) पर निर्भर है। परंतु यूनेस्को (2015) की रिपोर्ट बताती है कि

— "प्रशिक्षण की गुणवत्ता उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी उसकी उपलब्धता। "कई बार यहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल औपचारिकता बनकर रह जाते हैं, जिनका शिक्षण में ठोस प्रभाव कम दिखाई देता है।

2. मुख्य समस्याएँ

पारंपरिक पद्धतियों पर निर्भरता – अधिकांश शिक्षक अब भी पारंपरिक व्याख्यान-आधारित पद्धति अपनाते हैं और ICT आधारित शिक्षण या डिजिटल टूल्स का नियमित उपयोग नहीं करते।

संसाधनों की कमी – बिहार शिक्षा विभाग (2020) की रिपोर्ट के अनुसार, सारण प्रमंडल के लगभग 60% महाविद्यालयों में स्मार्ट कक्षाएँ और आधुनिक प्रयोगशालाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

प्रशिक्षण की निरंतरता का अभाव – एक बार प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद कई शिक्षक वर्षों तक बिना अद्यतन प्रशिक्षण के कार्य करते रहते हैं।

प्रेरणा की कमी – कपिल (2019) के अनुसार, "कुछ शिक्षक प्रशिक्षण को केवल औपचारिक आवश्यकता मानते हैं, जिससे सीखने की वास्तविक प्रक्रिया बाधित होती है।"

3. सकारात्मक पहलें

हाल के वर्षों में कुछ महाविद्यालयों ने अपने स्तर पर लघु प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित करना प्रारंभ किया है। डॉ. रमेश चंद्र मिश्र (2021) के अनुसार —"स्थानीय स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को अपने क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संदर्भ में उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने का अवसर देते हैं।"इसके अलावा, कुछ कॉलेजों ने डिजिटल प्रोजेक्टर, ई-लर्निंग सामग्री और ऑनलाइन परीक्षण प्रणाली को अपनाना शुरू किया है।

4. शोध एवं नवाचार में प्रशिक्षण की भूमिका

प्रशिक्षण से शिक्षकों को न केवल विषयगत अद्यतनता मिलती है, बल्कि शोध पद्धतियों, परियोजना-आधारित शिक्षण और छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाने की प्रेरणा भी मिलती है। जैसा कि पाउलो फ्रेरे (1970) ने कहा था —"शिक्षक भी जीवनभर का विद्यार्थी है।"यह दृष्टिकोण सारण प्रमंडल के शिक्षकों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि उन्हें बदलते शैक्षिक परिवेश के साथ तालमेल बिठाने की आवश्यकता है।

सारण प्रमंडल में शिक्षक-प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति मिश्रित है — एक ओर कुछ संस्थानों ने आधुनिक उपकरण और पद्धतियाँ अपनाई हैं, वहीं दूसरी ओर कई कॉलेज संसाधनों और निरंतर प्रशिक्षण की कमी से जूझ रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सुझाए गए अनुसार, इस क्षेत्र में नियमित, गुणवत्तापूर्ण और तकनीकी रूप से सुदृढ़ प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में ठोस सुधार लाया जा सके।

3. प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता और चुनौतियाँ

उच्च शिक्षा में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य केवल शिक्षण कौशल का विकास नहीं है, बल्कि शिक्षकों को नई शैक्षणिक तकनीकों, शोध-आधारित दृष्टिकोण और छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों से सुसज्जित करना भी है। यदि ये कार्यक्रम प्रभावी हों, तो वे शिक्षा की गुणवत्ता में दीर्घकालिक और ठोस सुधार ला सकते हैं। यूनेस्को (2017) के अनुसार,“प्रशिक्षण केवल अद्यतन ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि शिक्षकों को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।”प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के प्रमुख आयाम

1. विषयगत अद्यतनता

प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को अपने विषय में नवीनतम शोध, सिद्धांत और पद्धतियों से परिचित कराते हैं। अग्रवाल (2020) के अनुसार ,“एक प्रशिक्षित शिक्षक अपने विषय को केवल पढ़ाता नहीं, बल्कि उसमें नए दृष्टिकोण जोड़कर जीवंत बना देता है।”

2. शिक्षण विधियों में नवाचार

प्रशिक्षित शिक्षक केवल पारंपरिक व्याख्यान पद्धति पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि परियोजना-आधारित शिक्षण, समूह कार्य, केस स्टडी और संवादात्मक सत्रों को अपनाते हैं।

3. तकनीकी दक्षता

आज के डिजिटल युग में, ICT आधारित शिक्षण, स्मार्ट क्लासरूम और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का प्रयोग आवश्यक हो गया है। पांडे (2020) लिखते हैं,“प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक तकनीकी साधनों के उपयोग में आत्मविश्वास और दक्षता प्राप्त करते हैं।”

4. छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण

प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को विद्यार्थियों की विविध सीखने की शैलियों के अनुरूप शिक्षण विधियाँ अपनाने की प्रेरणा देते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में स्पष्ट कहा गया है ,“शिक्षक तभी प्रभावी है जब वह प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत सीखने की आवश्यकताओं को समझकर शिक्षण कर सके।”

5. प्रभावशीलता के उदाहरण

सारण प्रमंडल के कुछ कॉलेजों में फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP) और रिफ्रेशर कोर्स के बाद, शिक्षकों ने इंटरैक्टिव सत्र, ऑनलाइन टेस्टिंग और स्मार्ट क्लासरूम अपनाए। परिणामस्वरूप, छात्रों की सक्रिय भागीदारी और शैक्षणिक प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार देखा गया। पाउलो फ्रेरे (1970) के अनुसार, “शिक्षण तभी सार्थक है, जब शिक्षक और विद्यार्थी दोनों सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनें।”

6. प्रमुख चुनौतियाँ

7. संसाधनों की कमी

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रयोगशालाओं, डिजिटल उपकरणों और प्रशिक्षण केंद्रों का अभाव। यूनेस्को (2015) बताता है कि,"संसाधनों की कमी प्रशिक्षण के व्यावहारिक अनुप्रयोग को सीमित कर देती है।"

8. प्रशिक्षण की निरंतरता का अभाव

एक बार का प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है। सतत व्यावसायिक विकास आवश्यक है।

9. समय और कार्यभार का दबाव

उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों का शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यभार इतना अधिक होता है कि प्रशिक्षण के लिए समय निकालना कठिन हो जाता है।

10. प्रेरणा की कमी

कपिल (2019) के अनुसार, "कुछ शिक्षक प्रशिक्षण को केवल औपचारिकता मानते हैं, जिससे सीखने की वास्तविक प्रक्रिया प्रभावित होती है।"

11. क्षेत्रीय असमानता

शहरी क्षेत्रों में प्रशिक्षण के अधिक अवसर हैं, जबकि ग्रामीण कॉलेजों में यह संख्या सीमित है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम तभी प्रभावी होंगे जब वे नियमित, संदर्भानुकूल और तकनीकी रूप से अद्यतन हों। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है,"शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास ही गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा की नींव है।"

अतः सारण प्रमंडल में प्रशिक्षण की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए संसाधनों में निवेश, प्रशिक्षण की निरंतरता और शिक्षकों की मानसिकता में बदलाव आवश्यक है।

4. शिक्षक-प्रशिक्षण के शैक्षिक गुणवत्ता पर प्रभाव

शिक्षा की गुणवत्ता का मूल आधार शिक्षक की दक्षता और उसकी शिक्षण-शैली होती है। प्रशिक्षित शिक्षक न केवल विषय-वस्तु का गहन ज्ञान रखते हैं, बल्कि वे आधुनिक शिक्षण तकनीकों का प्रयोग करके विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमता का विकास करते हैं। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (2005) के अनुसार, "एक अच्छा शिक्षक वह है जो विद्यार्थियों में जीवनभर सीखते रहने की प्रेरणा जगाता है।"यह प्रेरणा तभी संभव है जब शिक्षक को उचित प्रशिक्षण प्राप्त हो।

1. शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि

प्रशिक्षित शिक्षक शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों का चयन विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, रुचि और आवश्यकताओं के अनुसार करते हैं। एनसीईआरटी (2017) की रिपोर्ट बताती है, "प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा पढ़ाए गए छात्रों का प्रदर्शन औसतन 20-25% अधिक पाया गया।" इससे स्पष्ट है कि प्रशिक्षण सीधे-सीधे शिक्षण परिणामों को प्रभावित करता है।

2. छात्र-केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा

प्रशिक्षण शिक्षकों को पारंपरिक व्याख्यान पद्धति से आगे बढ़कर संवादात्मक, परियोजना-आधारित और समूह-आधारित शिक्षण अपनाने के लिए प्रेरित करता है। पाउलो फ्रेरे (1970) कहते हैं, "शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, सोचने और नई दृष्टि से देखने की प्रेरणा दे।" प्रशिक्षित शिक्षक विद्यार्थियों को केवल जानकारी नहीं देते, बल्कि उन्हें स्वतंत्र विचारक बनने के लिए प्रेरित करते हैं।

3. तकनीकी दक्षता और नवाचार

आज की शिक्षा में डिजिटल तकनीक, स्मार्ट क्लासरूम और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का प्रयोग अनिवार्य हो गया है। प्रशिक्षण इन तकनीकों को प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता प्रदान करता है। पांडे (2020) के अनुसार,"प्रशिक्षित शिक्षक तकनीक को केवल उपकरण के रूप में नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बना देते हैं।"

4. शोध और नवाचार संस्कृति का विकास

उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं है, बल्कि शोध, नवाचार और ज्ञान-सृजन को प्रोत्साहित करना भी है। प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को शोध-पद्धति, डेटा विश्लेषण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम बनाते हैं। यूनेस्को (2015) के अनुसार, "Quality education depends on quality teaching, and quality teaching comes from quality teacher training."

5. शैक्षिक वातावरण में सुधार

प्रशिक्षित शिक्षक विद्यालय/महाविद्यालय में सकारात्मक और प्रेरणादायक वातावरण तैयार करते हैं। वे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाते हैं और सहयोगात्मक सीखने को प्रोत्साहित करते हैं। महात्मा गांधी (1946) ने कहा था,"एक शिक्षित शिक्षक हजारों आत्माओं को शिक्षित करता है।"

निष्कर्ष

शिक्षक-प्रशिक्षण का प्रभाव केवल कक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षण-शैली, विद्यार्थियों की उपलब्धि, शोध-उन्मुख सोच और शैक्षिक वातावरण को गहराई से प्रभावित करता है। बिहार जैसे राज्यों में, जहाँ संसाधनों और तकनीकी सुविधाओं की कमी है,

वहाँ शिक्षक-प्रशिक्षण शिक्षा की गुणवत्ता सुधार का सबसे प्रभावी साधन है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार,"शिक्षकों का सतत् व्यावसायिक विकास गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का मूल स्तंभ है।" इसलिए, शिक्षक-प्रशिक्षण को सतत, तकनीकी रूप से उन्नत और छात्र-केंद्रित बनाकर ही हम उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं।

संदर्भ:

अग्रवाल, के. (2020). अंकित योग्यता पर शिक्षक-प्रशिक्षण का प्रभाव. पटना: ज्ञान भारती प्रकाशन।

एनसीईआरटी (2017). भारत में विद्यालय शिक्षा पर वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

कपिल, एच. के. (2019). सांख्यिकी के मूल तत्व. मेरठ: विनोद पुस्तक मंदिर।

कलाम, ए. पी. जे. अब्दुल (2005). इग्नाइटेड माइंड्स. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।

गांधी, मोहनदास करमचंद (1946). मेरे स्वप्नों का भारत।

पांडे, बी. बी. (2020). शैक्षिक एवं सामाजिक अनुसंधान. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

बिहार शिक्षा विभाग (2020). उच्च शिक्षा वार्षिक रिपोर्ट. पटना: बिहार सरकार।

मिश्र, रमेश चंद्र (2021). शिक्षक प्रशिक्षण की स्थानीय रणनीतियाँ. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (2019). राज्य उच्च शिक्षा की स्थिति. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।

राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1954). शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।

फ्रेरे, पाउलो (1970). पीड़ितों का शिक्षण शास्त्र. न्यूयॉर्क: कंटिन्यूअम।

यूनेस्को (2015). वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट. पेरिस: यूनेस्को।

यूनेस्को (2017). शिक्षक-प्रशिक्षण और 21वीं सदी की शिक्षा. पेरिस: यूनेस्को।